तकनीक ने बहाई ज्ञान की धारा

कई जिलों में नेशनल इन्फॉर्मेटिक्स सेंटर बने विद्यार्थियों के लिए दूरदराज के विशेषज्ञ गुरुओं से सबक पाने के ठिकाने

■ अमिताभ श्रीवास्तव

चमचमाते, वातानुकूलित एनआइसी यानी नेशनल इन्फॉर्मेटिक्स सेंटर के सम्मेलन कक्ष को देखकर मधेपुरा का 19 वर्षीय सुधीर कुमार भौंचक है. बिहार के इस पिछड़े इलाके, जहां दिन में सिर्फ नौ घंटे ही बिजली रहती है, से आए इस युवक ने ऐसा लकदक क्लासरूम पहली बार देखा है. बड़े से कमरे में नई स्टाइल की शानदार कुर्सियां करीने से लगी हैं, जबकि सरकारी कॉलेजों में छात्रों के लिए टेढ़ी-मेढ़ी बेंचें ही होती हैं और इधर-उधर खैनी की पीक पड़ी होती है. जाहिर है अर्थशास्त्र के इस छात्र के लिए यह अजूबे जैसा है. कमरे के अंदर एक बड़ा परदा लगा है और भागलपुर विश्वविद्यालय, जो कि सुधीर के मधेपुरा से 100 किमी से ज्यादा दूर है, के सांख्यिकी विभाग के डॉ. ए.के. मिश्र 'डाटाबेस मैनेजमेंट के तत्व' विषय पर व्याख्यान दे रहे हैं. व्याख्यान खत्म होने के बाद सवाल पूछने की बारी है. सुधीर भी अपना सवाल रखता है और प्रोफेसर साहब बड़ी शालीनता से जवाब देते हैं. वे दरभंगा के एक छात्र के सवाल का भी मुस्कराकर जवाब देते हैं. ऐसे सवाल ई-मेल या हाथ से लिखे नोट द्वारा भी पूछे जा सकते हैं. एक कैमरा छात्र की लिखावट को स्कैन करके मॉडरेटर पर भेज देता है. दूरस्थ शिक्षा का यह अनुभव अध्यापक और छात्रों के बीच परस्पर बातचीत के मामले में कई बार तो परंपरागत कक्षाओं को भी पीछे छोड़ देता है.

सुधीर अकेला छात्र नहीं है. राज्यभर में आठ विश्वविद्यालयों के ढेरों छात्र इस विषय के विद्वान प्रो. मिश्र के अध्यापन का लाभ उठा रहे हैं. अगली कक्षा बायो-टेक्नोलॉजी की है. और ई-सेशन के लिए नए छात्र आते हैं. इन व्याख्यानों को कंप्यूटर पर 'सेव' भी कर लिया जाता है ताकि बाद में इंटनेट पर वे उपलब्ध रहें. इस तरह की कक्षा का बस एक ही कमजोर पक्ष है कि यहां अलिखित रूप से अंग्रेजी ही बोलनी पड़ती है. एक तरह से यह उनके लिए वरदान ही साबित हुआ है, बिहार के युवा एक अलग ही जबान बोल रहे हैं, मानो अंग्रेजी का भोजपुरीकरण हो गया हो. उन्हें दिक्कत तो हो रही है लेकिन वे दूसरे विश्वविद्यालयों के छात्रों के साथ भी अंग्रेजी में ही बोलने की कोशिश करते हैं.

दरअसल, शिक्षा का ढंग यहां पूरी तरह बदल गया है. छात्र अकसर अपने सवाल तैयार करते हैं. हर छात्र में आत्मविश्वास और बेझिझक बोलने की प्रवृत्ति दिखाई देती है. आखिरकार सुधीर को बिहार के सिलिकॉन कैंपस का, जो कि देश में अपनी तरह का पहला संस्थान है, छात्र होने का एहसास जो है. इस तरह के अनोखे संस्थान का श्रेय सूचना मंत्रालय की आइटी शाखा नेशनल इन्फॉर्मेटिक्स सेंटर (एनआइसी) को जाता है.

एनआइसी की ओर से तैयार किए गए इस शैक्षिक योजना कार्यक्रम को विद्या सागर नाम दिया गया है. इसमें बिहार के आठ विश्वविद्यालयों के अपने-अपने विषय के विशेषज्ञ अध्यापकों को पैनल में रखा गया है, हर शनिवार को ये अध्यापक विभिन्न जिलों में एनआइसी के कॉन्फ्रेंस स्टुडियो में जाकर दूरस्थ शिक्षण (वर्चुअल) कक्षाओं में जाते हैं और अपना व्याख्यान प्रसारित करते हैं. उधर राज्य के विभिन्न हिस्सों में कई सौ किमी दूर बैठे छात्र पूरी तल्लीनता के साथ इन व्याख्यानों का लाभ उठाते हैं, जिसमें वे अपने सवाल भी पूछ सकते हैं, मानो वे कक्षा में आमने-सामने बैठे हों.

> **"विद्या सागर की अवधारणा संवाद, सहयोग और कंप्यूटर कुशलता पर आधारित है."**
> **डॉ. सौरभ गुप्ता,** *प्रदेश सूचना तकनीक अधिकारी*

सभी फोटो: कृष्ण मुरारी किशन

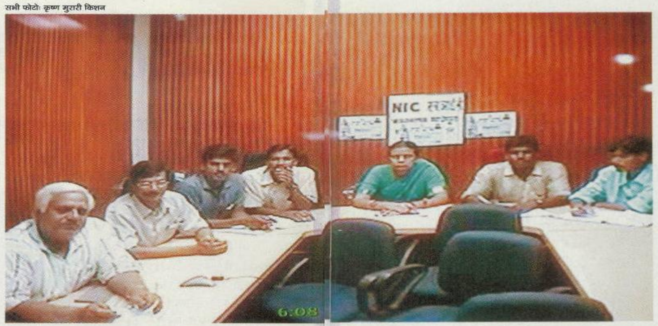

बेहतर उपयोग: एक केंद्र में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से पाठ पढ़ते छात्र; (नीचे) पटना में पश्चिम चंपारण प्रशासन से संपर्क बनाते मुख्यमंत्री

इस कार्यक्रम के तहत हर विश्वविद्यालय को महीने में एक शनिवार दिया गया है, जिस दिन अध्यापक सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे के बीच व्याख्यान देते हैं. इस तरह महीने के हर शनिवार को एक विश्वविद्यालय के पांच अध्यापकों को विभिन्न विषयों पर पांच व्याख्यान देने होते हैं. व्याख्यान के दौरान छात्र, अध्यापक और बिहार में अन्य विश्वविद्यालयों के विद्वान एक साथ उपस्थित होते हैं. हर व्याख्यान 45 मिनट का होता है जिसके बाद सवाल-जवाब का 15 मिनट का सत्र होता है. वरिष्ठ तकनीकी निदेशक और राज्य के सूचना तकनीक अधिकारी डॉ. सौरभ गुप्ता के मुताबिक, इस कार्यक्रम का मकसद बिहार के छात्रों को विश्वविद्यालयों के बेहतरीन अध्यापकों के व्याख्यानों का लाभ पहुंचाना है. वे कहते हैं, ''किसी खास विश्वविद्यालय में कुछ अध्यापक अपने विषय के विशेषज्ञ हैं. लेकिन उनके ज्ञान का लाभ दूसरे विश्वविद्यालयों के छात्रों को नहीं मिल पाता. इसलिए हमने इस भौगोलिक बाधा को दूर करने का फैसला किया, जिसका श्रेय हमारे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग नेटवर्क को जाता है. विद्या सागर की अवधारणा संवाद, सहयोग और कंप्यूटर कुशलता पर आधारित है. इसके सुचारू संचालन के लिए हर विश्वविद्यालय के लिए समन्वयक भी नामांकित किए गए हैं.''

ऐसे एक समन्वयक विजय कुमार बताते हैं कि यह विचार इस साल के शुरू में राज्यपाल आर.एस. गवई और उनके विशेष कार्य अधिकारी डॉ. आर. कृष्ण कुमार के साथ गुप्ता की बातचीत के डुदौरान उपजा. फिर विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से परामर्श किया गया और जल्दी ही इसे कार्यक्रम का रूप देते हुए 8 सितंबर को विद्या सागर की शुरुआत की गई. इस अवसर पर पटना विश्वविद्यालय के प्रख्यात प्रोफेसरों ने एनआइसी के पटना स्टुडियो में अपने व्याख्यान दिए. दूसरे विश्वविद्यालयों के अध्यापक, विद्वान और छात्र इस मौके पर अपने-अपने जिलों में एनआइसी के निकटतम केंद्रों में उपस्थित थे. शनिवार का दिन इन कक्षाओं के लिए चुना गया है. बाकी दिनों में बिहार प्रशासन को एनआइसी के स्टुडियो की जरूरत होती है. अभी पटना, गया, भोजपुर, सारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मधेपुरा, भागलपुर में विद्या सागर कार्यक्रम चल रहा है. एनआइसी अब इसे बाकी जिलों में भी चलाना चाहता है. उसके लिए काम कर रहे ए.के. पांडा, संजय कुमार, और राजेश कुमार सिंह जैसे समर्पित लोग शनिवार को भी लगन के साथ काम करते हैं, हालांकि इस दिन उनकी छुट्टी होती है. इस कार्यक्रम को नई दिल्ली में एनआइसी मुख्यालय के वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग प्रभाग और बिहार में एनआइसी जिला केंद्रों का सहयोग प्राप्त है.

बेशक, इस कार्यक्रम में सुधार की काफी आवश्यकता है. एनआइसी ने सरकार से मांग की है कि उसे हर विश्वविद्यालय और कॉलेज में कक्षाएं लगाने दी जाएं. एनआइसी केंद्र जिला मजिस्ट्रेट के दफ्तर के पास स्थित होते हैं, जहां पुलिस की टुकड़ियां मौजूद होती हैं. इससे साधारण छात्रों को वहां पहुंचने में झिझक होती है. फिर भी छात्र वहां जल्दी से जल्दी पहुंचना चाहते हैं. अध्यापक भी बढ़-चढ़कर उत्साह दिखा रहे हैं. किसी अतिरिक्त आर्थिक लाभ के बिना उनमें यह उत्साह निश्चित ही एक सुखद संकेत है. ■